موضوع الخطبة: **من حقوق المصطفى (صلى الله عليه وسلم) توقير صحابته**
(الخصائص العشرة للصحابة رضي الله عنهم)
الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي/حفظه الله
لغة الترجمة: الهندية
المترجم: طارق بدر السنابلي**(@Ghiras_4T)**

मुस्त़फा सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के अधिकारों में आपके सह़ाबा का सम्मान भी शामिल है

(सह़ाबा रज़ीअल्लाहु अंहुम के दस अधिकार)

إن الحمد لله نحمده ، ونستعينه ونستغفره، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا ومن سيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له، وأشهد أن محمدا عبده ورسوله.

प्रशंसाओं के पश्चात:

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह ताला की है, एवं सबसे उत्तम सिद्धांत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैही वसल्लम का सिद्धांत है और सब से घृणात्मक चीज धर्म में अविष्कार की हुई बिदअतें (नवाचार) हैं. हर नवोन्मेष गुमराही है, हर गुमराही नरक में ले जाने वाली है.

ए मुसलमानो!

अल्लाह त-आला से भय करो एवं उसी का डर सदैव अपने ह्रदय में जीवित रखो. उसी की आज्ञाकारीता करो एवं उस के आज्ञा का उल्लंघन करने से

बचो. ध्यान रखो कि अहले सुन्नत वल जमात के बुनियादी धारणाओं में यह बात सम्मिलित है कि उनके सहाबियों (साथियों) की प्रतिष्ठा का ध्यान रखा जाए,एवं उनका सम्मान किया जाए, उनके साथ उत्तम व्यवहार किया जाए, उनके अधिकारों का ज्ञात रखा जाए, उनकी आज्ञाकारीता की जाए, उनकी प्रशंसा उत्तम रूप में की जाए उनके क्षमा के लिए प्रार्थना की जाए उनके व्यक्तिगत झगड़ों के प्रति चुपचाप रहा जाए उनके शत्रुओं से शत्रुता रखी जाए उनमें से किसी के प्रति जो नकारात्मक संदेश फैले हुए हैं जिन्हें कुछ इतिहासकारों, अज्ञानी कथावाचकों, गुमराह शीओं एवं नवोन्मेष के पालन करने वालों ने प्रतिलिपि की है, उन से दूर रहा जाए, क्यों कि सह़ाबा रज़ीअल्लाहु अंहुम उस स्थान पर हैं कि किसी सह़ाबी को घृणात्मक रूप से याद ना किया जाए, नाही उनके किसी कार्य का उल्लंघन किया जाए, बल्कि उनके सकारात्मक रूपों को उजागर किया जाए एवं जो भी उनकी अच्छाइयां हैं उनकी प्रशंसा की जाएं, इसके अतिरिक्त जो भी अनुपयुक्त चीजें हैं उन पर चुप रहा जाए.[1]

शैख़ुल इस्लाम इब्ने तैमिया रहमतुल्लाही अलैह का वर्णन है: " अहले सुन्नत वल जमात के सिद्धांतों में से है कि उनके हृदय एवं जीभ सहाबा के प्रति पूर्णतः शुद्ध होती हैं. जैसा कि अल्लाह ताला ने इनके बारे में इस आयते करीमा में वर्णन किया:

---

[1] [1]थोड़े हेर फेर के साथ क़ाज़ी अ़याज़ की "الشفا " के छटे अध्याय से लिया गया है:आपके सम्मान में यह भी शामिल है कि आपके सह़ाबा का सम्मान किया जाए और उनका अनुसरण किया जाए|

وَالَّذِينَ جَاءُوا مِن بَعْدِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِإِخْوَانِنَا الَّذِينَ سَبَقُونَا بِالْإِيمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِي)
(قُلُوبِنَا غِلًّا لِّلَّذِينَ آمَنُوا رَبَّنَا إِنَّكَ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ (١٠: سورة الحشر

अर्थात: "उनके लिए जो इन के पश्चात आएं जो कहेंगे कि ए हमारे पालनहार! हमें क्षमा कर दे एवं हमारे उन भाइयों को भी जो हम से पहले ईमान स्वीकार चुके हैं, और इमान रखने वालों की ओर से हमारे हृदय में द्वेष (शत्रुता) ना डाल, ए हमारे रब! नि: संदेह तू बहुत बड़ा दयालु एवं कृपालु है."[2]

1– ए मोमिनो! सहाबा को अन्य व्यक्तियों पर यह श्रेष्ठता प्राप्त है कि अल्लाह ताला ने पूर्ण मनुष्य में उन्हें अपने दूत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैही वसल्लम का संगी बनाया, उन्हें सांसारिक जीवन में आप का दर्शन करके मन को शांति प्रदान करने, आपके मुंह से पवित्र हदीस सुनने, आपसे धार्मिक रेखाओं को जानने,आपसे प्रशिक्षण प्राप्त करने, एवं आप जिन प्रकाश एवं निर्देश के साथ भेजे गए उन्हें पूर्ण रूप से संसार के कोने कोने तक पहुंचाने का काम दे कर विशेष सम्मान प्रदान किया,उनकी महानताओं में यह भी शामिल है कि आपके साथ जिहाद करने, इस्लाम के प्रचार प्रसार करने एवं अन्य मनुष्यों को इसकी ओर निमंत्रण देने के कारण उन्हें बड़ी सफलता दी गई इन के पश्चात आने वालों को जितना सवाब मिलेगा उन्हें भी उतना ही सवाब मिलेगा क्योंकि उन्होंने ही इनको सत्य का मार्ग दर्शन कराया है और यह बात सभी जानते हैं कि जो व्यक्ति सच एवं

---

[2] **इब्ने तैमिया का यक कथन "العقيدة الواسطية"से लिया गया है|**

सीधे मार्ग का निर्देश कराता है या उसकी ओर लोगों को निमंत्रण देता है उसे उतना ही सवाब मिलता है जितना उस पर चलने वाले को मिलता है और इस सवाब के कारण उन आज्ञाकारीयों के सवाब में कोई कटौती नहीं होती है.

2–ए मोमिनो! अल्लाह ताला ने सहाबा की बहुत अधिक प्रशंसा की है एवं उनके गुणों को बयान किया है तौरात, इंजील एवं क़ुरआन में उनको उच्च स्थान प्रदान किया है, उनको बड़ी सफलता तथा माफ़ी का विश्वास दिलाया है, अल्लाह ताला का वर्णन है:

مُّحَمَّدٌ رَّسُولُ اللَّـهِ ۚ وَالَّذِينَ مَعَهُ أَشِدَّاءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَاءُ بَيْنَهُمْ ۖ تَرَاهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَبْتَغُونَ) فَضْلًا مِّنَ اللَّـهِ وَرِضْوَانًا ۖ سِيمَاهُمْ فِي وُجُوهِهِم مِّنْ أَثَرِ السُّجُودِ ۚ ذَٰلِكَ مَثَلُهُمْ فِي التَّوْرَاةِ ۚ وَمَثَلُهُمْ فِي الْإِنجِيلِ كَزَرْعٍ أَخْرَجَ شَطْأَهُ فَآزَرَهُ فَاسْتَغْلَظَ فَاسْتَوَىٰ عَلَىٰ سُوقِهِ يُعْجِبُ الزُّرَّاعَ لِيَغِيظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ ۗ وَعَدَ اللَّـهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ مِنْهُم مَّغْفِرَةً وَأَجْرًا عَظِيمًا(٢٩: سورة الفتح)

अर्थात: "मोहम्मद सल्लल्लाहो अलेही वसल्लम अल्लाह के दूत हैं और जो मनुष्य उनके साथ हैं वे काफ़िरों पर कठोर एवं आपस में दयालु हैं तू उनहें देखेगा कि वे रुकू एवं सजदा कर रहे हैं, अल्लाह ताला की कृपा एवं सहमति की जिज्ञासा में हैं, उनका चिन्ह उनके मुखड़ों पर सजदों के कारण हैं, उनका यही उदाहरण तौरात में है एवं उनका यही उदाहरण इंजील में है उस खेती के जैसा जिसने अपना अंखवा निकाला फिर उसे शक्तिशाली बनाया और वह मोटा हो गया फिर अपनी डाली पर सीधा खड़ा हो गया एवं अन्नदाताओं को प्रसन्न करने लगा ताकि इनके कारण वे काफिरों

को चिड़ा सकें उन ईमान वालों और पूण्य करने वालों से अल्लाह ताला ने माफी एवं बड़े सवाब का विश्वास दिलाया है." इमाम कुर्तुबी रहमतुल्लाहि अलैह इस आयत की व्याख्या करते हुए लिखते हैं: "यह एक उदाहरण है जिसे अल्लाह ताला ने सहाबा के संदर्भ में प्रस्तुत किया है. जिसका अर्थ यह है कि वे पहले बहुत कम संख्या में होंगे, फिर उनकी संख्या अधिक हो जाएगी जब नबी सल्लल्लाहु अलैही वसल्लम ने दुर्बलता एवं असमर्थता की स्थिति में मनुष्य को धर्म की ओर आमंत्रण देना प्रारंभ किया तो एक-एक करके लोगों ने आपके इस आमंत्रण को स्वीकार कर लिया यहां तक कि आप का संदेश उस पौधे की तरह शक्तिशाली हो गया जो बीज बोते समय दुर्बल दिखता है फिर स्थिरता के साथ उसमें शक्ति आती जाती है यहां तक कि उसके सूंढ़ एवं डालियां शक्तिशाली हो जाती हैं इस प्रकार यह एक बहुत ही उपयुक्त उदाहरण सिद्ध हुआ."(थोड़े हेरे फेर के साथ कुरतुबी का कथन समाप्त हुआ)

3–अल्लाह के बंदो! सहाबा की महानता एवं उनके उच्च स्थान का एक प्रमाण यह भी है कि अल्लाह ताला ने उनके बारे में यह सूचना दी है की वे पवित्रता की बात के ज़्यादा निकट थे जैसा कि सूरतु-उल-फतह में अल्लाह का कथन है:

(وَأَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ ٱلتَّقْوَىٰ وَكَانُوٓا۟ أَحَقَّ بِهَا وَأَهْلَهَا ۚ وَكَانَ ٱللَّهُ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيماً.(الفتح:26

अर्थात: "अल्लाह ताला ने मुसलमानों को पवित्रता(तक़वा) की बात पर जमाए रखा एवं वे इसके ज़्यादा योग्य थे, और अल्लाह ताला को प्रत्येक वस्तु के बारे में पूर्णत: ज्ञात है."

अत:अल्लाह ने यह कि उन्हें तक़वा की बात पर जमाए रखा जाए,जो कि कल्मा (لاالہ الااللہ)है, उन्हें कल्मा तौही़द के अधिकारों और उनके अनुपालन का आदी बनाया,और उन्हों ने उन अधिकारों का पालन किया,फिर अल्लाह ने यह सूचना दी कि वह उस तक़वा के दूसरे की तूलना में अधिक पात्र थे, अर्थात वह इस बात के पात्र थे कि उन्हें तक़्वा से अलंक्रत किया जाए,क्यों कि उनके दिल पुण्य एवं भलाई से भरे थे|

4–सह़ाबा की महानता एवं महत्ता का एक प्रमाण यह भी है कि अल्लाह ने इसके अतिरिक्त यह भी सूचना दी है कि यदि लोग उसी तरह ईमान स्वीकार कर लें जिस प्रकार सहाबा ने किया तो वे भी निर्देश को प्राप्त कर लेंगे.

अल्लाह ताला का वर्णन है:

(فَإِنۡ ءَامَنُواْ بِمِثۡلِ مَآ ءَامَنتُم بِهِۦ فَقَدِ ٱهۡتَدَواْۖ . (البقرة:**137**

अर्थात: "यदि वे उसी प्रकार ईमान स्वीकार कर लें जैसा कि तुमने किया तो वे भी निर्देश (हिदायत) प्राप्त कर लेंगे."

5–सहा़बा की महानता एवं महत्ता का एक प्रमाण यह भी है कि अल्लाह ताला ने सहाबा के पक्ष में यह गवाही दी है कि वे सत्य एवं ईमान के स्वीकार करने वाले हैं और अल्लाह गवाह के रूप में प्रयाप्त है,अल्लाह ताला का वर्णन है:

وَٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ وَهَاجَرُواْ وَجَٰهَدُواْ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ وَٱلَّذِينَ ءَاوَواْ وَّنَصَرُوٓاْ أُوْلَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْمُؤْمِنُونَ حَقًّاۚ
لَّهُم مَّغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ.(الأنفال: **74**)

अर्थात: "जिस मनुष्य ने ईमान स्वीकार किया, प्रवासी बने, अल्लाह के मार्ग में जिहाद किया, जिन्होंने शरण दी, एवं सहयोग किया, यही लोग सत्य मोमिन हैं इनके लिए माफ़ी है एवं प्रतिष्ठा वाली रोज़ी है."

6–सहा़बा की महानता एवं महत्ता का एक प्रमाण यह भी है कि क़ुरआन मजीद में दो स्थानों पर यह वर्णन आया है कि अल्लाह उनसे प्रसन्न हो गया वे दोनों आयतें निम्नलिखित हैं:

(1) ۞ لَّقَدْ رَضِىَ ٱللَّهُ عَنِ ٱلْمُؤْمِنِينَ إِذْ يُبَايِعُونَكَ تَحْتَ ٱلشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِى قُلُوبِهِمْ فَأَنزَلَ ٱلسَّكِينَةَ
عَلَيْهِمْ وَأَثَٰبَهُمْ فَتْحًا قَرِيبًا.(الفتح:**18**)

अर्थात: "नि: संदेह अल्लाह ताला मोमिनो से प्रसन्न हो गया जबकि वे पेड़ के नीचे तुझसे प्रतिज्ञा ले रहे थे, उनके हृदय में जो कुछ था उसने उसे ज्ञात कर लिया, उनको शांति एवं संतोष प्रकट किया एवं उन्हें शीघ्र ही सफलता प्रदान की."

दूसरा स्थान सूरह-ए-तौबा है जिसमें वर्णन हुआ कि अल्लाह ताला उनसे प्रसन्न हो गया.

رَّضِىَ ٱللَّهُ عَنۡهُمۡ □وَٱلسَّـٰبِقُونَ ٱلۡأَوَّلُونَ مِنَ ٱلۡمُهَـٰجِرِينَ وَٱلۡأَنصَارِ وَٱلَّذِينَ ٱتَّبَعُوهُم بِإِحۡسَـٰن
تَجۡرِى تَحۡتَهَا ٱلۡأَنۡهَـٰرُ خَـٰلِدِينَ فِيهَآ أَبَدٗاۚ ذَٰ□لِكَ ٱلۡفَوۡزُ ٱلۡعَظِيمُ. □وَرَضُواْ عَنۡهُ وَأَعَدَّ لَهُمۡ جَنَّـٰت
(التوبة:100))

अर्थात: " जो शरणार्थियों एवं उपयोगीयों (मुहाजिरीन-व-अंसार) भूतपूर्व एवं प्रथम हैं और जितने लोग सत्यता के साथ उनकी आज्ञाकारी हैं अल्लाह उन संपूर्ण लोगों से प्रसन्न हो गया एवं वे सभी लोग भी अल्लाह ताला से खुश हो गए और अल्लाह ताला ने उनके लिए ऐसे बग़ीचे उपलब्ध कर रखे हैं जिनके नीचे नेहरें बह रही होंगी जिनमें वे सदैव रहेंगे यह बड़ी सफ़लता है."

7–सह़ाबा की महानता एवं महत्ता का एक प्रमाण यह भी है कि वे उम्मत में इस्लाम धर्म के सबसे बड़े विधिवेत्ता एवं धर्मशास्त्र थे,क्यों कि उन्हों ने पैगंबर सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की निगरानी में प्रशिक्षण पाई थी, क़ुर्आन को नाज़िल होते देखा था, आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बताया कि उन में से चार उल्ल्ोखनीय सह़ाबा–जो कि खोलफाए राशेदीन हैं–की सुन्नत अनुसरण युग्य है,उनके पश्चात आने वालों को उनका अनुसरण करना चाहिए, अल्लाह के रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने

फरमायाः "मैं तुम्हें वसीयत करता हूं कि अल्लाह का तक़्वा अपनाए रहना और अपने शासकों के आदशों को सुन्ना और मानना,चाहे कटे हुए अंग वाला कोई ह़ब्शी दास ही क्यों न हो,निःसंदेह तुम में से जो मेरे पश्चात जीवित रहा वह अनेक मतभेद देखेगा, अतःउन स्थिति में मेरी सुन्नत और मेरे खलीफाओं की सुन्नत अपनाए रखना,खोलफा जो हिदायत वाले हैं,सुन्नत को पूरे शक्तिपूर्वक थामना,बक्लि ढड़ों से पकड़े रहना, नए नए नवाचारों और अविश्कारों से अपने आपको बचाए रखना,निःसंदेह प्रत्येक नई बात नवाचार है और प्रत्येक नवाचार गुमराही है |[3]

8–सह़ाबा की महानता एवं महत्ता का एक प्रमाण यह भी है कि अल्लाह ताला ने अपने दूत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उन सहाबा से परामर्श लेने का आदेश दिया.

अल्लाह ताला का वर्णन है:

(وَشَاوِرۡهُمۡ فِي ٱلۡأَمۡرِۖ فَإِذَا عَزَمۡتَ فَتَوَكَّلۡ عَلَى ٱللَّهِۚ.(آل عمران:159

अर्थात: "कार्यों का परामर्श उन (सहाबा) से क्या करें जब आप की प्रतिबद्धता ठोस हो जाए तो अल्लाह ताला पर विश्वास रखें."

9–सह़ाबा की महानता एवं महत्ता का एक प्रमाण यह भी है कि इन के पश्चात आने वाले मुसलमानों को भी यह निर्देश दिया है कि वे उनकी

---

[3] इस ह़दीस को इब्ने ह़िब्बान(1/179) ने रिवायत किया है और उपरोक्त शब्द इसी के हैं,तथा अबूदाऊद(4607),तिरमिज़ी(2676),इब्ने माजा(42)और अह़मद(127–4/126)आदि ने इसे रिवायत किया है और अल्बानी ने सही कहा है|

क्षमा या माफ़ी के लिए अल्लाह ताला से प्रार्थना करें एवं मोमिनों के प्रति अपने ह्रदय में द्वेष न रखें.

अल्लाह ताला का वर्णन है:

وَٱلَّذِينَ جَآءُو مِنۢ بَعۡدِهِمۡ يَقُولُونَ رَبَّنَا ٱغۡفِرۡ لَنَا وَلِإِخۡوَٰ□نِنَا ٱلَّذِينَ سَبَقُونَا بِٱلۡإِيمَٰـــنِ وَلَا تَجۡعَلۡ فِى
قُلُوبِنَا غِلاًّ لِّلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ رَبَّنَآ إِنَّكَ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ. (الحشر:**10**)

अर्थात: "उनके लिए जो इन के पश्चात आएं जो कहेंगे कि ए हमारे पालनहार! हमें क्षमा कर दे एवं हमारे उन भाइयों को भी जो हम से पूर्व ईमान स्वीकार कर चुके हैं एवं इमान वालों की ओर से हमारे ह्रदय में द्वेष (शत्रुता) ना डाल ए हमारे रब! नि: संदेह तू कृपालु एवं दयालु है."

10–सह़ाबा की महानता एवं महत्ता का एक प्रमाण यह भी है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने स्पष्टता के साथ कहा कि सर्वश्रेष्ठ युग सहाबा का युग था, रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का वर्णन है: जिसका अर्थ यह है: "संपूर्ण मनुष्य में सर्वश्रेष्ठ लोग मेरे युग के लोग हैं फिर जो उनके निकट हैं फिर जो उनके निकट हैं."[4]

सह़ी मुस्लिम के शब्द हैं"मेरे संगठन में सर्वश्रेष्ठ लोग वे हैं जिनके समक्ष मेरा अवतार हुआ."

---

[4] **बुख़ारी:2652, मुस्लिम:5233 ने अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ि अल्लाअल्लाहु अनहु सर प्रतिलिपि की है.**

11–सहाबा के महानता का प्रमाण यह भी है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बताया कि उनका सवाब उनके पश्चात आने वालों की तुलना में कई गुना अधिक है नबी सल्लल्लाहु वाले वसल्लम का वर्णन है:

" मेरे सहाबा को बुरा भला ना कहो क्योंकि तुम में का कोई उहुद पर्वत के बराबर भी स्वर्ण दान कर दे तो वह उनके मुद अथवा उसके अर्ध के बराबर भी नहीं पहुंच सकता."[5], [6]

इस हदीस में "नसीफ़" एक शब्द आया है जिसका अर्थ अर्ध है एवं मुद एक सा-अ के चौथे पार्ट को कहते हैं.

इसका अर्थ यह है कि सहाबी का दान पूण्य यदि एक मुद हो तो उसका फल उसके पश्चात आने वाले लोगों के दान पूण्य के फल से कहीं बढ़कर है, चाहे उनका दान पुण्य उहुद पर्वत के बराबर ही क्यों ना हो. अल्लाह के बंदो!हमारे और उनके सदक़ों में इस अंतर का कारण यह है कि सहाबी के सदक़े के भीतर अनंत प्रेम, निष्कपट (इख़्लास) एवं उनके हृदय में असीन सत्यता थी.

---

[5] देखें:النهاية

[6] इसे बुख़ारी:3673, एवं मुस्लिम:2541 ने अबू सईद खुदरी रज़ि अल्लाहु अन्हु से प्रतिलिपि किया है एवं इसी अर्थ की हदीस अबू हुरैरा राज़ि अल्लाहू अन्हु से भी प्रतिलिपि की गई है जिसको इमाम मुस्लिम:2540 ने प्रतिलिपि किया है

सारांश यह है कि सहाबा को अन्य मनुष्यों पर १० विशेषताओं के कारण इस प्रकार उच्च स्थान प्राप्त है:

(१) अल्लाह ने उन्हें अपने दूत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की संगत में रहने का अवसर दिया.

(२) उन्हें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखने एवं संगत में रहने का सौभाग्य प्राप्त है.

(३) नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनसे प्रेम करते थे.

(४) वे सर्वश्रेष्ठ लोग थे.

(५) उनकी महानता का उल्लेख तौरात इनजील एवं क़ुरआन में हुआ एवं उन सभी पुस्तकों में उनकी प्रशंसा की गई है.

(६) उन्होंने इस्लाम स्वीकार करने में पहल की.

(७) उन्होंने अल्लाह, इस्लाम धर्म, एवं नबी के लिए अपनी प्राण, संपत्ति एवं संतान तक को त्याग दिया. उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उत्साहित किया एवं आपके ठोस विचार में किसी प्रकार का लचीलापन नहीं आने दिया एवं इस्लाम धर्म के सदैव जीवित रखने के लिए संपूर्ण कठिनाइयों को सहा.

(८) वे उन संपूर्ण सराहनीय विशेषताओं से प्रदर्शित थे जिनको उन्होंने भविष्यवक्ता के दीपक से परोक्ष रूप से प्राप्त किया था एवं प्रशिक्षित हुए थे.

(९) उन्होंने कुरआन एवं हदीस को अपने हृदय में सुरक्षित किया और समस्त संसार तक पहुंचाया और उन्हीं सहाबा के कारण प्रलय की दिवस तक संसार में इस्लाम धर्म फलता फूलता रहेगा.

(१०) वे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पश्चात अल्लाह के धर्म के सबसे ज़्यादा ज्ञानी थे. जिस बात को वे सामूहिक रूप में कह देते थे कोई भी उसका विरोध नहीं कर सकता था|यह वे १० विशेषताएं हैं जिनके कारण सहाबा को अपने से पूर्व एवं अपने से पश्चात संपूर्ण व्यक्तियों पर उच्चता एवं प्रभुत्व प्राप्त है, जो व्यक्ति उन विशेषताओं को जानले और उन्हें समझ जाए वह इस्लाम में सह़ाबा के स्थान से भी अवगत हो जाएगा और के हृदय में उनका प्रेम और सम्मान का दरवाजा भी खुल जाएगा|

अल्लाह ताला मुझे एवं आप को पवित्र कुरआन की बरकत से समृद्धि प्रदान करे. मुझे एवं आपको इस की आयतों एवं बुद्धिमत्ता पर आधारित सदुपदेशों का लाभार्थी बनाए. मैं अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने एवं आप सभी के लिए हर प्रकार के दंड एवं पाप से क्षमा के लिए अनुरोध करता हूं.आप भी अल्लाह से क्षमा की भीख मांगें.

नि: संदेह वह अधिक से अधिक पश्चाताप स्वीकार करने वाला एवं क्षमा करने वाला है.

द्वितीय उपदेश: स्थान एवं प्रतिष्ठा में सह़ाबा के मध्य आपसी अंतर एवं वर्गीकरण

الحمد لله وكفى، وسلام على عباده الذين اصطفى، أما بعد:

मुसलमानो!अल्लाह तआ़ला से डरो और उसका भय अपने हृदय में स्वेद जीवित रखो, और जान लो कि सहाबा अपनी महानता में दूसरे से विभिन्न हैं. अहले सुन्नत वल जमात इस बात में विश्वास रखते हैं कि नबी के पश्चात इस उम्मत में सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति अबु बक्र हैं, फिर उमर, फिर उस्मान एवं फिर अली हैं. अहले सुन्नत वल जमात अंसार के विपरीत मुहाजिरीन को उच्च स्थान देते हैं क्योंकि मुहाजिमुहाजिरों (शरणार्थियों) ने इस्लाम स्वीकार करने में पहल की थी फिर उनके पश्चात अंसार का स्थान है जिन्होंने इस्लाम स्वीकार करने के साथ-साथ अल्लाह के दूत नबी सल्ला वसल्लम को शरण भी प्रदान किया था एवं सहयोग किया था. अहले सुन्नत वल जमात सफ़लता[7] से पूर्व दान प्रदान करने वालों उच्च स्थान स्थान देते हैं उन लोगों के विपरीत जिन्होंने सफ़लता के पश्चात दान प्रदान किया था एवं युद्ध किया था.

---

[7] **अर्थात:फ़तहे हुदैबिया**

वे इस बात में विश्वास रखते हैं कि बदर युद्ध लड़ने वाले जिनकी कुल संख्या ३१३ थी उनके संबंध में अल्लाह ताला का वर्णन है:" तुम जो चाहो करो मैं ने सामूहिक तौर पर तुम सबको क्षमा कर दिया है."[8]

तथा यह भी आस्था रखते हैं कि पेड़ के नीचे अर्थात ह़ोदैबिया के स्थान पर شجرة الرضوان के नीचे बेअ़त(प्रतिज्ञा)करने वालों में से कोई भी नरक में नहीं जाएगा जिनकी कुल संख्या १४०० से अधिक थी. वे उनके लिए स्वर्ग की गवाही देते हैं जिनके लिए अल्लाह के दूत ने गवाही दी जैसे: अशरह-ए-मुबश्शरा (१० भाग्यशाली व्यक्ति जिन को स्वर्ग में जाने की सूचना दी गई.) एवं अन्य सहाबा.

उम्मत पर सह़ाबा के अधिकारों का निष्कर्ष

ए मोमिनो! निष्कर्ष यह कि सहाबा के हम पर ४ अधिकार हैं:

प्रथम अधिकार : उनसेप्रेमकरनाएवंउनसेप्रसन्नरहना, द्वितीय अधिकार:इस बात पर ईमान रखना कि वह नबी सलल्लाहु अलैहि सवल्लम के पश्चात स्वोंत्तम मानव थे, तीसरा अधिकार:उनके आपसी मतभेद के विषय में अपनी ज़बान बंद रखना,चौथा अधिकार:उनके प्रति नवाचारियों के जो छूट हैं उनका बचाव करना जैसे रवाफिज़ और उनके अन्य अनुयायियों की शत्रुताएं|

---

[8] इसे बोखारी(3007)और मुस्लिम(2494)ने अ़ली बिन अबू त़ालिब रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित किया है|

आप यह ज्ञात रखें -अल्लाह आप संपूर्ण पर कृपा करे- कि अल्लाह ने आप सभी को एक महान कार्य का आदेश दिया:

(إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا.(الأحزاب:56

अर्थात: " अल्लाह ताला एवं उसके देवदूत उस नबी पर रहमत भेजते हैं ए इमान वालो! तुम भी उन पर दुरुद भेजो एवं खूब सलाम भेजते रहो.

अल्लाह के श्रद्धालुओ!

अल्लाह ताला न्याय का, भलाई का, अपनों के साथ सत्य व्यवहार करने का, आदेश देता है एवं असभ्यता वाले कार्यों से, अभद्र चालों से, कुर्ता एवं दुरुपयोगों से रोकता है. महान अल्लाह को याद करो वह भी तुमको याद करेगा उसकी दी हुई लाभदायक वस्तुओं पर उसके आभारी रहो वह तुम को और अधिक देगा नि: संदेह अल्लाह ताला को याद करना बहुत बड़ी चीज़ है एवं अल्लाह हमारे कार्यों के बारे में पूर्णत: ज्ञात रखता है.

लेखक:

माजिद बिन सुलैमान

१२ रबीउस्सानी, १४४२ हिजरी

जूबैल,सऊदी अरब।